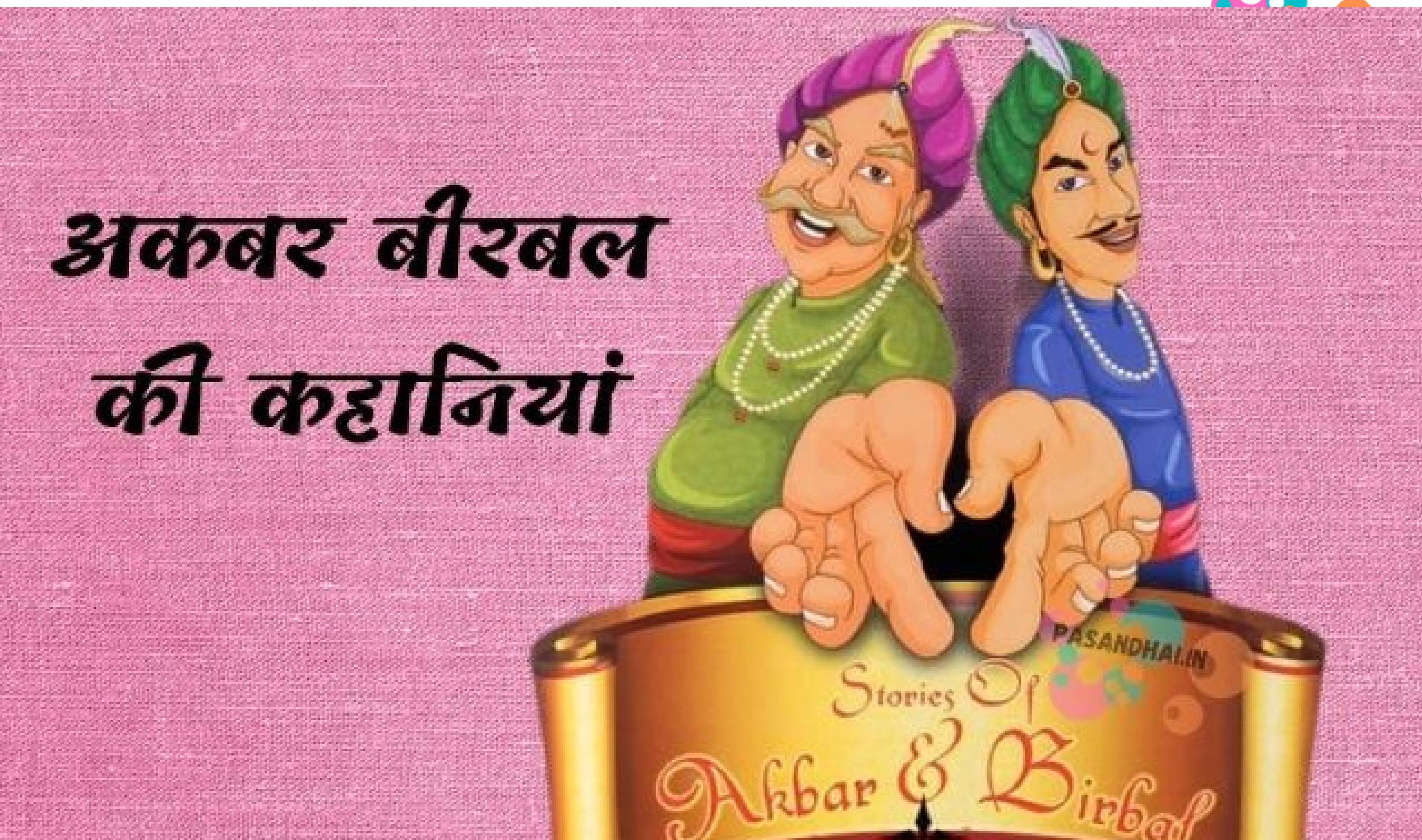
PASANDHAI.IN





नकली शेर – अकबर बीरबल की मजेदार कहानी

बादशाह अकबर अपने पड़ोसी मुल्को से अच्छी मित्रता रखते थे. एसे ही एक फारसी मित्र थे जो की बहुत ही विशाल साम्राज्य के राजा थे. बादशाह और उनका मित्र दोनों एक दुसरे को अक्सर पत्र लिखा करते और एक दुसरे से मजाक चलती रहती. बादशाह अक्सर चुटकले और शायरिया लिखकर भेजते. और फारसी का राजा उनको अक्सर तोह्फे भेजा करता.

एक दिन फारसी के राजा ने एक ऐसा तोह्फा और पत्र भेजा जिसको देखकर बादशाह चौंक गये. तोहफे के अन्दर से एक पिंजरा और एक पत्र निकला. पिंजरे के अन्दर एक शेर था. बादशाह ने पत्र खोलकर देखा तो उसके अन्दर लिखा था की इस शेर को कैसे भी करके बाहर निकालना हैं और इस पिंजरे को खोलना भी नहीं हैं. और अगर ऐसा नहीं किया तो हम आपकी सल्तनत पर हमला करेंगे.

बादशाह पत्र पढ़कर सोच मे पड़ गये. बादशाह ने तुरंत सभा बुलाई और उस पिंजरे और पत्र को सभी के सामने पेश किया. सभी को पत्र सुनाकर सभी से एक एक करके राय मांगी. उस दिन बीरबल किसी सरकारी काम से बाहर गए हुए थे. अकबर को इस बात का अफ़सोस था की बीरबल इस मुसीबत बला में उनके साथ क्यों नहीं हैं. पूरे दरबार में सभी एक दुसरे का मुहं देखने लगे. अकबर ने पुछा कि किसी के पास इस पहेली का कोई हल हैं क्या?

बादशाह समझ गये की विषय जरा गंभीर हैं. फ़ौरन बीरबल को बुलाने को कहा.

दुसरे ही दिन बीरबल दरबार में हाजिर हो गये. बीरबल ने झुककर अकबर का अभिवादन किया. अकबर ने बीरबल के हाथ में उस पत्र को थमवा दिया.बीरबल ने पत्र को ध्यान से पढ़कर. आग और लोहे के सरिये की व्यवस्था करने को कहा.

बादशाह के हुक्म पर तुरंत सरिये और आग की व्यवस्था की गई. बीरबल ने सरिये को गर्म किया और पिंजरे में शेर को चिपका दिया. जहाँ से शेर को सरिया लगा वहां से शेर खंडित हो गया. बीरबल ने राहत भरी सांस ली और बोले जहापनाह मसला सुलझ जायेंगा. बीरबल ने अकबर से एक बड़े अग्नि कुण्ड की व्यवस्था करने को कहा. अकबर ने दास लोगो से कहकर इसकी व्यवस्था करवा दी. बीरबल के कहने पर उस पूरे पिंजरे को अग्नि कुण्ड में रखवा दिया. बंद पिंजरे से पूरा शेर पिघल कर बाहर निकल गया. बीरबल की चतुराई पर बादशाह अति प्रसन्न हुए और पूछा की बीरबल तुमको कैसे पता चला की इसके अन्दर लाख का शेर हैं. जहापनाह इस पत्र ने साफ साफ लिख रखा हैं की इस शेर को पिंजरे से निकालना हैं वो भी बिना इसको खोले तो इसका मतलब हैं की जरूर शेर किसी धातु का नही हैं, हमने तो केवल देखने के लिए सरिया मंगाया था की क्या वाकई शेर पिघालता हैं की नहीं. हमने सही अंदाजा लगाया और शेर पिघल गया.

बादशाह एक बार और बीरबल की चतुराई से प्रसन्न हो गए और कहा – जब तक तुम मेरे साथ हो मुझे फ़ारसी क्या किसी से भी डरने की जरुरत नहीं हैं.

फिर क्या था फ़ारसी का दूत एक और पत्र लेकर गया और राजा को एक और बीरबल की बुद्दिमानी की कहानी सुनाई..फ़ारसी का राजा भी बीरबल की चतुराई से अति प्रस्सन हुआ और अगला तोहफा बीरबल के लिए भेजा.

इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal kahaniya) “नकली शेर” से क्या सीखा- बुद्धिमानी हमेशा अपना सर ऊपर रखाती हैं.

अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां के आलावा हम दुसरे विषयों पर भी लिखते हैं आप उन को भी पढ़ सकते हैं.

उपहार का बंटवारा – अकबर बीरबल का रोचक किस्सा

मुग़ल बादशाह अकबर उदारतावादी थे. इसलिए बादशाह अकबर समय समय पर अपनी प्रजा से मिलने के लिए प्रजा मिलन दरबार लगाया करते थे. दरबार में बादशाह अकबर लोगो से मिलते उनको सुनते और जिनसे प्रसन्न होते उनको उपहार देते. एक बार इसी प्रकार का दरबार लगाया था. दूर दूर से सभी लोग मिलने आ रहे थे. एक दूर दुराज गाँव में महेशदास नाम का आदमी रहता था. महेशदास ने भी मन बनाया की ये बादशाह लोग किस प्रकार रहते हैं, उनकी जीवनशैली कैसी है. चलो, एक बार देखकर आते हैं. यह विचार बना कर महेशदास निकल पड़े. महेश दास जब महल के बाहर पहुंचे तो देखा कि बहुत सारे लोग बादशाह से मिलने के लिए पंक्ति बनाकर खड़े थे. पहरेदार एक एक करके सभी से एक एक स्वर्ण मुद्रा ले रहा था. लेकिन महेशदास तो खाली हाथ आये थे. फिर भी महेश दास पंक्ति में लगे रहे. जब महेश दास की बारी आयी और पहरेदार ने मुद्रा मांगी तो, भाई मेरे पास तो कुछ नहीं हैं, मैं तो बस एसे ही बादशाह से मिलने आया. पहरेदार ने मना कर दिया, एसे तो हम नही जाने देंगे. महेश दास के निवेदन के बाद, एक शर्त पर जाने की मंजूरी दी. महेश दास ने भी हा भर दी. और शर्त को पूरा करने का वादा किया और महल के द्वार में प्रवेश कर गया. महेश दास महल में प्रवेश करते ही पूरे महल को ध्यान से देखने लगा.

महल की नक्काशी और बारीक़ कारीगरी देखखर महेशदास चौंक गया. घूमते फिरते महेशदास वहां पहुँच गया. जहाँ बादशाह अकबर प्रजा से मिल रहे थे. एक एक करके सभी बादशाह के सामने अपनी हाजिरी दे रहे थे, अपनी समस्या, अपनी इच्छा बादशाह के सामने पेश करते और बादशाह उनको सुलझाने की कोशिश करते. महेशदास खड़े खड़े सोच रहे थे की मैंने तो सोचा ही नही कि मुझे क्या मांगना हैं. सोचते सोचते महेशदास की बारी आ गयी और महेशदास बादशाह के सामने पेश हुआ.

बोलो क्या नाम हैं तुम्हारा! और कहाँ से आये हो तुम .... जी! जहापनाह मेरा नाम महेशदास हैं और मैं आपके ही सल्तनत के दूर गाव का आम नागरिक हूँ

बोलो क्या फरिहाद लेकर आये हो?

जी जहापनाह मुझे कुछ नही चाहिए... मैं तो बस आपसे ही मिलने आया हूँ...

तुमने अपना नाम क्या बताया ? .... जी महेशदास

हाँ! महेशदास .... हम तुम्हारी उदारता से अति प्रसन्न हुए. तुम बादशाह अकबर के दरबार में खडे हो. हम तुमको एसे ही खाली नही जाने देंगे... और तुम यहाँ से खाली हाथ जाओ, हमारी शानो शौकत को शोभा नही देता. तुम कुछ भी मांगो...

बादशाह के इतने आग्रह पर महेशदास ने अपनी फरमाइश पेश की...

जहापनाह मुझे अपनी नंगी पीठ पर एक सौ कोड़े चाहिए...

बादशाह एसी फरमाइश सुनकर चोंक गये.

बादशाह ने कारण पुछा....

तो महेशदास ने कहा- बाहर जो आपका पहरेदार खड़ा हैं, उसके साथ हमरी एक शर्त लगी हैं की दरबार से हमको जो कुछ भी मिलेगा उसका आधा हिस्सा, उसको देना पड़ेगा.

बादशाह ये सुनकर थोड़े बौखला गए और और उन्होंने मुह बनाकर ....पहरेदार को बुलाने को भेजा.

पहरेदार ने बादशाह को झुककर सलाम किया. बादशाह ने व्यंग्य में उससे कहा हम तुम्हारी पहरेदारी से प्रसन्न हुए.हमनें निश्चय किया हैं महेश दास ने जो भी माँगा उसका सौ फीसदी तुमको देंगे. पहरेदार खुस हुआ. जी जहापनाह! जैसा आप उचित समझे.

क्या तुम सुनना नही चाहोंगे कि इसने फरियाद की. – बादशाह अकबर बोले.

जी जहापनाह जरूर- पहरेदार बोला.

इसने(महेशदास) सौ कौड़े मांगे, और हमने इसकी मंजूरी भी दे दी

बादशाह ने गुस्से में आकर सैनिको से कहा इसे गिरफ्तार कर लो और इसकी अच्छे से फरियाद पूरी करो.

हा तो महेशदास तुम हमको बेहद पसंद आये.
क्या तुम हमारी दरबारी में कोई काम करना चाहोंगे.
मुल्ला दो प्याजा बोले जहापनाह एसे कैसे किसी को भी आप दरबारी में रख सखते हैं... मेरा मतलब ना कोई जान पहचान न कोई..लेना देना. मुल्ला दो प्याजा अपनी जबान को सँभालते हुए बोले.
मुल्ला तुम भी ठीक ही कहते हो, अच्छा तुम ही बताओ की इसको कैसे परखा जाये. बादशाह बोले.
मुल्ला दो प्याजा सोचकर बोलते हैं – अगर ये यह बता दे की मेरे दिमाग मे क्या चल रहा हैं तो शायद बात बन जाये.
महेशदास क्या तुम इस प्रश्न का जवाब देना चाहोंगे. जी जहापनाह जरूर!
मुल्लाजी आपके दिमाग में अभी ये चल रहा हैं कि बादशाह अच्छे हैं, और वो हम सभी का कल्याण करते हैं. हमे बादशाह से कोई शिकायत नही हैं.
क्या मुल्लाजी हम सही कह रहे हैं न.
मुल्लाजी बनावटी मुस्कान के साथ जी जहापनाह ये बिलकुल ठीक कह रहा हैं.
क्या मुल्ला अभी तुम्हे कोई प्रश्न पूछना हैं क्या?
नही जहापनाह..
तो महेशदास हम तुम्हे अपनी दरबारी में काम करने को आमंत्रित करते हैं.
लेकिन हम तुमको एक नाम देना चाहेंगे...
जी जहापनाह आपका हुक्म सर आँखों पर.
हमारा दरबार और पूरी मुगलिया सल्तनत तुमको बीरबल के नाम से जानेंगी.
इस प्रकार बीरबल को मुग़ल सल्तनत में पदवी मिली.
इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal kahaniya)- उपहार का बंटवारा, से हमने क्या सिखा – हमारी बुद्धि और ईमानदारी हमको कभी जीवन में हरा नहीं सकती.

सबसे बड़ा हथियार – अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां

अकबर और बीरबल दोनो का रिश्ता राजा और मंत्री से बढकर था. दोनों के बीच कुछ न कुछ लतीफे चलते ही रहते. अकबर और बीरबल के बीच कभी कभी एसी बाते भी होती जिनको परखने में जान का खतरा भी होता. एक बार अकबर ने बीरबल से पुछा संसार में सबसे बड़ा हथियार कोनसा हैं.
बादशाह संसार में सबसे बड़ा हथियार हैं – आत्म-विश्वास... बीरबल ने जवाब दिया.

बादशाह अकबर ने इस बात को अपने दिल में रख लिया और किसी दिन इसकी परख करने का निश्चय किया. देवयोग से एक दिन एक हाथी पागल हो गया. हाथी को काबू करने के लिए उसे जंजीरों में जकड़ा गया.
अकबर ने आज बीरबल के आत्मविश्वास को परखने की सोची.

sabse-bada-hathiyar-akbar-birbal-hindi-stories

अकबर ने बीरबल के आत्म विस्वाश की परख करने के लिए एक तरफ बीरबल को बुलावा भेजा. दूसरी तरफ महावत को हाथी की जंजीरों को खोलने का आदेश दिया.
बीरबल को इस बात का पता नही था. जब बीरबल, बादशाह अकबर से मिलने के लिए दरबार जा रहे थे तो पागल हाथी की जंजीरों को खोल दिया गया. बीरबल अपनी मस्ती में ही चले जा रहे थे, उनकी नज़र पागल हाथी पर पड़ी.
हाथी चिंघाड़ता हुआ उनकी तरफ आ रहा था. बीरबल बेहद बुद्धिमान, हाजिर जवाब और शातिर दिमाग के थे. बीरबल तुरंत समझ गये की बादशाह ने आत्मविश्वास की परख के लिए इस हाथी की जंजीरे खोल दी गयी हैं.
हाथी दौड़कर सुन्ड ऊँची करके बीरबल की तरफ आ रहा था. बीरबल इसे स्थान पर खड़े थे कि भागकर भी नही बच सकते थे. ठीक उसी समय बीरबल को कुत्ता दिखायी दिया. हाथी इतना करीब आ गया कि बीरबल को सुन्ड में लपेट लेता. तभी बीरबल ने कुत्ते की पिछली दोनों टांगो को पकडकर तेजी से हाथी पर फेंका. कुत्ते की भयानक चिके सुनकर हाथी गबरा गया और भागने लगा.

sabse-bada-hathiyar-akbar-birbal-hindi-stories

अकबर को इस बात की खबर मिल गयी, और उनको यह मानना पड़ा की – वाकई संसार का सबसे बड़ा हथियार “आत्मविश्वास” हैं. और बीरबल ने जो कुछ भी कहा वो सच हैं.

इस अकबर बीरबल की कहानी(akbar birbal kahaniya) सबसे बड़ा हथियार से हमने क्या सिखा – जीवन में कठिनाईयों पर विजय पाने के लिए आत्मविश्वास एक महत्वपूर्ण हथियार हैं. हाथी रुपी विडम्बनायें आती रहेंगी, हमारा कर्तव्य हैं कि उसके सामने डटकर खड़े रहे. अगर हम अपने आत्म विश्वास को कम नहीं करे तो अंत में भगवान सहायता के कोई न कोई रास्ता जरूर निकल देंगे, जैसे बीरबल को कुत्ते के रूप में मिला.

समझदारी से भरा घड़ा – अकबर बीरबल की कहानी

एक दिन अकबर और उसके दरबारी दरबार में बैठे थे. तभी राजा सीलोन का दूत वहां आ पहुंचा. वो किसी विशेष काम के लिए यहाँ पर आया था.
सलाम बादशाह... मैं राजा सीलोन के दरबार से आया हूँ. हमारी सल्तनत में आपका स्वागत हैं. आपके दरबार में बहुत सारे बुद्धिमान दरबारी हैं और हमारे राजा ने समझदारी से भरे घड़े की गुजारिश की हैं.
कुछ दरबारी बोले – समझदारी से भरा हुआ घड़ा.. अब ये कहाँ से भरकर लायेंगे. ये तो बहुत ही बेहूदा गुजारिश हैं. (फुसफुसाते हुए)
किसी मंत्री ने सलाह दी की बादशाह सिलोन के राजा हमे मात देना चाहते हैं..... और वो सफल भी हो जायेंगा. कोई भी हमे नही बचा पायेंग. यहाँ तक बीरबल भी. ये तो बहुत मुश्किल गुजारिश की हैं सीलोन के राजा ने- अकबर ने कहा. खैर तुम्हारा इसके बारे मे क्या कहना हैं बीरबल.
बीरबल बोले हाँ! हम थोड़ी तो समझदारी तो भेज ही सकते हैं सीलोन के राजा के लिए. आख़िरकार उन्होंने गुजारिश की हैं तो, हमको उमकी गुजारिश पूरी करनी चाहिए.
अकबर बोले – अगर तुम ऐसा कहते हो तो ठीक है, तुम जो भी करोगे ठीक ही करोगे. मझे तुम पर पूरा यकींन हैं.... शुक्रिया जहापनाह! मुझे घड़े को भरने के लिए कुछ हफ्तों की जरुरत पड़ेगी. आप जितना चाहे वक्त ले सकते हैं- दूत ने कहा.
अकबर ने कहा बीरबल जरा ध्यान से क्योंकि तुमने जिस चुनोती को स्वीकार की हैं. उस पर हमारी भी इज्जत दाव पर लगी हैं. बीरबल ने कहा जहापनाह सब्र रखिये, सीलोन के राजा को समझदारी से भरा घड़ा जरूर मिलेगा.
उसी शाम को बीरबल ने अपने सहायक को बुलाया......... बीरबल के दिमाग में एक गजब की योजना चल रही थी.
बीरबल ने अपने सहायक से कहा की मुझे कुछ मिट्टी के घड़े चाहिए. और ध्यान रहे उन घडो की गर्दन कुछ पतली रहे.
इतना कहकर बीरबल बगीचे में चले गये, और कुछ समय में सहायक भी मिट्टी के गड़े भी लेकर आ गया. बीरबल ने उसको उन घडो को लेकर कद्दू के क्यारी में आने को कहा.

बीरबल ने एक घड़ा माँगा और घड़े के चारों और लकड़ीयां को रस्सी से लपेटकर बांध दी. बीरबल ने उन घडो को उल्टा करके कद्दू के फूल पर रख दिया. इसी तरह सभी घडो को बांध कर उल्टा रख दिया.
सभी घडो को रखने के बाद बीरबल ने सहायक से बोला इन कद्दू के बेलों को खाद पानी देते रहना. और इसको किसी को छूने मत देना. और किसी को बताना भी मत.

इतना कहकर बीरबल वहां से चल दिए.
माली सहायक ने उन कद्दुओ और घडो का खूब ख्याल रखा.
कुछ हफ्तों बाद अकबर ने बीरबल से पूछा ... बीरबल कुछ काम को आगे बढाया की नही. तुम्हारी तरफ से कोई समाचार भी नही आया.
जहापनाह काम लगभग समाप्त हो ही गया – ऐसा बीरबल ने कहा.
मैं ये देखने के लिए बहुत ही उत्साहित हूँ – ऐसा बादशाह ने कहा. लेकिन तुम घड़े को समझदारी से कैसे भरोगे. अब मुझे दो हफ्ते और चाहिए. फिर काम पूरा हो जायेंगा. फीर हम सीलोन के दूत को बुला कर समझदारी के घड़े दे सकते हैं.
उम्मीद करता हूँ हमारी इज्जत पर कोई दाग नहीं लगेगा -अकबर ने कहा. ऐसा बिकुल नहीं होगा जहापनाह – बीरबल ने कहा.
दो हफ़्ते बाद........
सभी दरबार में इक्कठे हुए. भीड़ में फुसफुसाहट और हंसी सुनाई दे रही थी. सभी दरबारियों की नज़र बीरबल पर थी. सभी ये सोच रहे थे कि आखिर बीरबल ने क्या किया होगा...समझदारी के घड़े को भरने के लिए. कोई मंत्री बोल रहा था की मुझे नही लगता की बीरबल इस चुनौती को पूरा कर पाया होगा. मुझे भी ऐसा ही लगता है. ऐसा कर पाना किसी के लिए भी नामुमकिन हैं. अरे वो बीरबल हैं. जरूर उसने कोई न कोई रास्ता निकल ही दिया होगा – बुढा मंत्री बोला. सभी इस चुनौती और इसके परिणाम के बारे में बातें कर रहे थे.
बीरबल और दूत दोनों दरबार में हाजिर होते हैं.
समझदारी से भरे घड़े को दिखाने के लिए क्या तुम तैयार हो बीरबल- बादशाह अकबर ने कहा. जी हाँ जहापनाह – अकबर ने कहा.
बीरबल ने दो तली बजाई, सभी दरवाजे की तरफ देखते हैं. बीरबल का सहायक घड़े को थाली में रखकर हाजिर होता हैं.
ये लीजिये जहापनाह आपके सामने समझदारी से भरा घड़ा हाजिर हैं. घड़े को ऊपर से कपडे से ढका हुआ था ताकि कोई अन्दर से देख न सके की अन्दर क्या भरा हुआ था.
दरबारी चिल्लाने लगे – ऐसा कैसे हो सकता हैं, ऐसा हो ही नही सकता, ये नामुमकिन हैं. शांत हो जाओ – अकबर ने कहा.
इस घड़े को तुम अपने राजा के पास ले जाओ. लेकिन याद रहे तुम्हें ये सारे घड़े खाली करके लौटाने होंगे, वो भी बिना कोई नुकसान पहुंचाए. और आप समझदारी के फल को बाहर निकालने चाहते हो तो उसे भी कोई खरोच नही आनी चाहिए.
क्या मैं इसे देख सकता हूँ- दूत ने कहा. हा जरूर अब ये आपका ही हैं – बीरबल ने कहा.

दूत उस घड़े के अन्दर देखता हैं और चोंक जाता हैं. उसने घड़े के अन्दर एक कद्दू देखा. दूत कुछ बोले उसके पहले बीरबल बोले एसे हमारे पास पांच घड़े हैं.

अगर तुम्हारे राजा को और समझदारी चाहिए तो हम और दे देंगे. तुम्हारे सामने कोई खड़ा हो सकता हैं भला. तुम लाखो में एक हो बीरबल.

दूत घड़ा लेकर चला जाता हैं. बीरबल मैं बहुत ज्यादा उत्साहित हूँ. तुमने कहा तुम्हारे पास और पांच घड़े हैं जरा हमे भी दिखाओ – अकबर ने कहा. बीरबल ने दूसरा घड़ा मंगाया. सहायक दूसरा घड़ा भी ले आया. अकबर देखकर जोर जोर से हंसने लगा. बिलकुल ....यही हैं समझदारी का फल. सीलोन के राजा देखकर जरूर समझदार बन जायेंगे. इसके बाद सभी को दरबार में उस फल को दिखाया. सभी ने बीरबल की वाहवाही की. बीरबल तुम मेरे सबसे अच्छे दरबारी हो, तुम्हारे आगे सभी चाय कम पानी हैं.

इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal kahaniya) समझदारी से भरा घड़ा, से हमने क्या सिखा – विपरीत परिस्थिति में भी जो विवेक से काम लेता हैं, अंत में वही विजय होता हैं.

सबसे बड़ा मुर्ख कौन हैं – अकबर बीरबल की मजेदार कहानी

एक दिन बादशाह अकबर अपने कक्ष में अकेले बैठे थे. तभी उनके दिमाग में ख्याल आया. सेवक से कहकर बीरबल को बुलाया. बीरबल को हुक्म होते ही वहां पर हाजिर हो गए. अकबर अक्सर अजीब सवाल पूछते थे और अजीब उतर जानने की इच्छा रखते थे. लेकिन अबकी बार जो अकबर सुनना चाहता थे, बहुत ही अजीब था.

अकबर ने कहा – बीरबल.. बादशाह होने के नाते में हमेशा समझदार लोगो से ही मिलता हूँ. हमेशा मैं समझदार और बुद्धिमान लोगो से गिरा रहता हूँ. और मैंने बेवकूफ देखा ही नहीं.... एक भी नहीं. लेकिन अभी मैं बेवकूफों के बारे में जानने के लिए काफी उत्साहित हूँ. मैं जानना चाहता हूँ की सबसे बड़ा मुर्ख कौन हैं? इसलिए मैं तुम्हें जिम्मेदारी सौपता हूँ तुम हमारी सल्तनत के पांच सबसे बड़े मूर्ख ढुंढकर लाओ.... जैसा आप कहे जहापनाह. मैं ऐसा ही करूँगा.

बादशाह ने पांच मूर्खो को ढूंढने के लिए एक महिना का समय दिया. इस पर बीरबल ने कहा – ये तो बहुत ज्यादा समय हो गया जहापनाह. मैं आपके लिए यह कम बहुत जल्दी खत्म कर दूंगा जहापनाह. इतना कहकर बीरबल निकल गये. जब बीरबल गाँव की सैर कर रहे थे तो उनको अजीब अजीब लोग देखने को मिले.

बीरबल एक घोड़े से जा रहे थे. उनको एक आदमी दिखाई दिया जो अपने सर पर एक भारी लकडियो का गट्टर लिए एक घोड़े के साथ जा रहा था. बीरबल ने उनसे पुछा भाई तुम इतना भारी गट्टर अपने सर पर क्यों लेकर जा रहा हैं. और इस घोड़े को खाली क्यों ढो रहे हो. हुजुर मेरा घोडा बहुत बुढा हो गया हैं. अगर इस पर लकडियो का गट्टर रख दिया, तो गिर जाएगा, और फ़िर किसी काम का नही रहेगा. बीरबल ने कहा वाह भाई... पहला बेवकूफ तो मिल गया. चलो मैं तुम्हें बादशाह अकबर से मिलाता हूँ. और तुमको मजबूत घोड़ा भी दूंगा. फिर तुम्हें कभी अपने सर पर वजन नही उठाना पड़ेगा. आप तो बहुत दयावान हैं हुजुर..मैं आपका शुक्रिया अदा कैसे करू..... मेरे पास शब्द नही हैं.

दोनों आगे बढ़े. कुछ दुरी पर उनको एक आदमी जमींन पर लेटे हुए और हाथ आकाश की और फैलाये हुए मिला. बीरबल ने कहा इसे क्या हुआ ये एसे क्यू लेटा है. उस बूढ़े घोड़े वाले ने कहा मुझे लगता हैं इसको कहीं चोट लगी हैं. चलो चलकर देखते हैं. क्या पता मैं उसकी कुछ मदद कर पाऊ. बीरबल उसके पास गये, और पुछा? क्या तुम ठीक हो भाई! क्या तुम्हें मदद की जरुरत हैं? चलो मैं तुम्हें खड़ा होने मैं मदद करता हूँ.

नहीं! नही! कृपया मेरे हाथो को छूना मत. क्यों भाई! तेरे हाथों में ज्यादा दर्द हो रहा हैं?

नही नही! असल में मेरी बीबी ने मुझसे इतना बड़ा घड़ा लेन के लिए कहा. अगर मैंने अपना हाथ हिलाया तो मैं घड़े का आकर भूल जाऊंगा. और मेरी बीवी बहुत गुस्सा होगी. और अगर मैं गलत आकर का धड़ा ले गया तो पूरी जिंदगी इसके लिए परेशान करेगी.

बीरबल ने जोर से आह भरी! कितना बड़ा मुर्ख हैं. बीरबल ने इसे भी साथ लेने का फैसला कर लिया.

बीरबल ने उसे कहा – अगर मैं तुमको हर आकर का घड़ा दू तो क्या तुम मेरे साथ चलोगे. वो आदमी भी मान गया. और बीरबल का शुक्रिया किया. वो तीनो निकल पड़े.

बीरबल जैसे ही घोड़े पर चड़ने वाला था कि एक आदमी आया और बीरबल से टकरा गया. आदमी इतना भागकर आया की बिरबल को गुस्सा आ गया और उस पर चिल्लाने लगे. क्या तुम अंधे हो या तुम्हारा दिमाग ख़राब हो गया.

मुझे माफ़ कर दीजिये हुजुर. मैंने अभी अभी मस्जिद में शाम-की-हजाम पढ़ी हैं. मैं देख रहा था की मेरी आवाज कहा तक पहुँचती हैं. इसके लिए मैं आवाज के पीछे पीछे भाग रहा था. इतने आप बीच में आ गये. वो मौलवी बोलता रहा और बीरबल उसकी मुर्खता देखता रहा और आहे भरता रहा... वाह बादशाह क्या सल्तनत हैं आपकी. चलो इस आवाज़ को भूल जाओ. तुम मेरे साथ चलो. मैं तुम्हें बहुत सारा सोना दूंगा. बीरबल उन सभी को अपने साथ अपने घर ले गया और उन सभी को वहा रुकने को कहा.

बीरबल को अभी और बेवकूफ ढूंढने थे.

जैसे ही बीरबल थोड़ी दुरी पर निकला दो लोगो को लड़ते हुए देखा. बीरबल ये देखने गया की उनको क्या परेशानी हैं. अरे! भाइयो तुम दोनों लड़ क्यों रहे हों?

अरे इसने मुझे धमकी दी है...ये अपने शेरो को मेरे भैंसों पर छोड़ देगा.

लेकिन यहाँ न तो मुझे शेर दिख रहे ना ही भैस – ऐसा बीरबल ने कहा.

आपको दिखेंगे हुजूर! अगर ऊपर वाले ने हमारी एक एक इच्छा पूरी कर दी तो. मैं एक शेर मागुंगा और ये एक भैंस.

दुसरे आदमी ने कहा – क्या आपने सुना हुजुर. अब आप ही देख लीजिये. दोनों फिर से झगड़ने लग गए. किसी तरह बीरबल उन दोनों को अपने साथ ले गया.

पाचों को एक साथ जहापनाह के सामने पेश किया.
अकबर ने कहाँ बीरबल तुमने तो बहुत जल्दी इस काम को खत्म कर लिया. तुम तो बड़े हो तेज हो.
जहापनाह ये कोई मुश्किल काम नही था. किसी बेवकूफ को ढूढना किसी समझदार को ढुढने से आसन काम हैं.
फिर बीरबल ने पूरे दरबार में उन पांचो की घटनाओ का विस्तार से वर्णन किया.
क्या आपको पता हैं हुजुर! पांच सबसे बड़े मुर्ख आपके दरबार मे ही बैठे हैं.
वो आप और मैं हैं. ये तुम क्या कह रहे हो बीरबल. अपनी जबान को लगाम दो. ये काम अपने आप में बड़ी बेवकूफी थी. जिस तरह से आपने मुझे बेवकूफों को ढुढने का काम दिया. और मैं भी, जिसने इस हुक्म का पालन किया.
इस बात पर सभी हंस पड़े. तो आपको भी पता चल गया होगा की सबसे बड़ा मुर्ख कौन हैं? कमेंट बॉक्स में अपने विचार जरूर लिखे.

इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal kahaniya) सबसे बड़ा मुर्ख कौन हैं? से हमने क्या सिखा – हमको विरासत में जो बुद्धि मिली हैं उसको सही विचार करने के लिए उपयोग में लाये. जिस काम का कोई औचित्य नहीं हैं. उसको मन में न आने दे.

इत्र की एक बूँद – अकबर बीरबल हिंदी किस्से

बादशाह अकबर मुग़ल काल के जाने माने बादशाह माने जाते थे. बादशाह बड़े ही शौक़ीन और खुशमिजाजी किस्म के थे. एक बार की बात हैं कि बादशाह का जन्म दिवस नजदीक आ रहा था. जन्म दिन मनाने के लिए विशाल दरबार सजाया गया था.
सभी दरबारी और बादशाह के रिश्तेदार आने लगे और बादशाह को जन्मदिन की बधाई देने लगे. हर कोई बादशाह को खुश करने के लिए कुछ न कुछ तोहफा जरूर लाता. बादशाह सभी के तोहफों को अपने हाथ से स्वीकार कर अपने सेवक को दे देते.

बादशाह को अलग अलग किस्म के इत्र का बहुत मोह था.

बादशाह अपने मन ने आस दबाये थे की अभी तक कोई विशेष इत्र नही आया. तभी कोई मित्र बादशाह के लिए इत्र लेकर आया, बादशाह ने इत्र को देखकर अपना संयम खो दिया, और उस इत्र की सीसी को अपने दाँये हाथ में लेकर, बांये हाथ को पीछे किया और उस सीसी को थोड़ा टेड़ा करते हुए मुस्कराए और बोले, ह्म्म्म... हमारी नज़रे सारे तोहफों में इसी की तलाश में थी.

आप पढ़ रहे हैं – 'अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां'

इतने में इत्र की एक बूँद नीचे गिर गयी. गिरती हुई बूँद ठीक बादशाह के सामने थी. अब बादशाह उस बूँद को किसी भी तरह व्यर्थ नहीं जाने देना चाहते. फट से बूँद को लपकना चाहा, परंतु बूँद सोफे पर गिर गयी. और रुई की गहराई में समां गई. बादशाह की इस हरकत को बीरबल ने देख लिया, और ऐसा करते हुए बादशाह ने भी बीरबल को देख लिया. बादशाह फटाक से अपने मूल चरित्र में आये...

बादशाह रात भर सोये नहीं... इस बात को लेकर की बीरबल उनके बारे में क्या सोचेगा. सारी रात बादशाह बाये हाथ को सर के निचे और दायें हाथ से दाढ़ी को सहलाते रहे...और सुबह इसका हल निकालने का निश्चय किया. ऐसा विचार कर बादशाह सो गए.

सुबह उठते ही बादशाह ने अपने पांच दस सेवकों को बुलाया. और हुक्म दिया की जाओ अपने महल में जितना भी इत्र हैं सारे इत्र को एक हौद में डाल दो.

हुक्म पाकर सारे नौकर झटाक से सारे महल को छानबीन कर फटाक से सारे इत्र को हौद में डाल दिया. फिर बादशाह ने सारे मंत्रीमंडल को दरबार में इक्कठा किया, ताकि सभी लोग अकबर की महानता को समझ सके. फिर बादशाह ने एक गुहार लगायी की – बादशाह अकबर के दरबार से जिस किसी को जितना चाहिए, उतना इत्र ले जाये.

ऐसा करके बादशाह ये दिखाना चाहते थे कि – वो इत्र की एक बूँद तो क्या, पूरे हौद की कुर्बानी देने को तैयार हैं.

बीरबल को ये सब समझ से आ गया. और भांप लिया कि हो न हो कल की घटना का ही नतीजा हैं... बीरबल से रहा नहीं गया और पूछ लिया जहापनाह ये सब किसलिए...?

अरे बीरबल! दान पुन्य करते रहना चाहिए...

अब बीरबल क्या कहे....बीरबल कहना चाहते थे... एक बूंद से खोयी प्रतिष्टा, हौद में कहा मिलेगी. लेकिन बीरबल चुप रहे... और मन में मुस्करा कर बादशाह के काम की तारीफ करने लगे.

इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal kahaniya) इत्र की एक बूँद से हमने क्या सिखा – अपने स्वाभाविक रूप को इस प्रकार ढाले कि, हमारी ओछी हरकते भी लोगो को प्रेरणा लगे. बादशाह की तरह नही कि एक बूँद की गलती के लिए पूरा हौद का हर्जाना भरना पड़े.

तीरंदाजी बीरबल – अकबर बीरबल लतीफे

एक बार बादशाह के दरबार में सभा चल रही थी और बातों की उलझन में बीरबल फिर विद्वान साबित हुए. अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा कि बीरबल तुम केवल बातों के तीरंदाजी हो. अगर सचमुच तीर चलाना पड़े तो तुम्हें नानी याद आ जाएगी. बीरबल थोड़ा मुस्कराए और बोले मैं सचमुच का तीरंदाजी हूँ जहापनाह! बीरबल का निशाना गलत हो जाए तो जो चोर को सजा वो बीरबल को भी मंजूर. ऐसा बीरबल ने कहा.

इस मसले पर दरबारियों को लगा कि अबकी बार बीरबल अपनी बातों में खुद फ़स गए. दरबार के सभी मंत्री संत्री भी बीरबल की हर देखना चाहते the. इसलिए सभी ने एक साथ गुहार लगा कर कहा कि बीरबल को अभी के अभी परखा जाए.

सभी मैदान में पहुंचे. बीरबल के हाथ में तीर और कमान सोंप दिया. कुछ दुरी पर स्थित पेड़ को लक्ष्य बनाकर निशाना लगाने को कहा गया. सभी का मानना था कि बुद्धि के तीर चलाने वाले का सचमुच तीर चलाना क्या जाने.

बीरबल ने पहला निशाना लगाया. तीर लक्ष्य पर न लगकर आगे निकल गया. बीरबल को पहले से मालूम था कि उनका निशाना चुकेगा. फिर भी बीरबल इस असफलता को स्वीकार करते हुए दुसरे के सर मरना चाहते थे. बीरबल फटाक से चिल्लाकर बोले, ये रही मुल्ला-दो-प्याज़ा की तीरंदाजी. मुल्लाजी ठेब गये. और बाकि सभी ठेगा लगाकर हंस पड़े. बीरबल ने दूसरा तीर निकाला. यह तीर भी लक्ष्य को पार कर गया. बीरबल फिर चिल्लाकर बोले यह रही टोडरमल की तीरंदाजी. राजा टोडरमल मुस्कराए और मुंछ दबाई और दरबारियों में ठेंगा गूंजा. बीरबल ने तीसरा तीर कमान पर लगाया और संयोग से यह सही जगह पर लगा. इस पर बीरबल ने बड़े रोफ से कहा ये रही बीरबल की तीरंदाजी. इस पर बादशाह अकबर मुस्कराए और बीरबल को उसकी बातों की और तीरंदाजी पर शाबाशी दी. इस तरह बीरबल से जलने वालो को एक बार फिर मुंह की खानी पड़ी.

इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal latife) से हमने क्या सिखा – कभी कभी बुद्दिमानी भी जित का ताज पहना देती हैं.

शहर का काजी – अकबर बीरबल की मजेदार कहानी

दो मित्र थे रामलाल और श्यामलाल. रामलाल गरीब और सीधा-साधा आन आदमी था. जबकि श्याम लाल लालची और बेईमान. फिर दोनों में दोस्ती थी. एक बार रामलाल को प्रदेश जाना पड़ा. वह सारा सामान कीमती सामान श्याम लाल के पास रख गया ताकि सुरक्षित रहे.

वर्ष भर बाद वह वापस आया और श्याम लाल से अपना सामान माँगा. मगर बेईमान श्यामलाल में लालच में आकर सामान देने साफ़ इंकार कर दिया.रामलाल ने इसकी बड़ी मिन्नत की. लेकिन कोई फायदा नही हुआ. अंत में दुखी होकर श्याम लाल के खिलाफ शिकायत करने के लिए रामलाल बीरबल के पास पहुंचे. और बीरबल को सारी बात सुनाई. बीरबल ने सारी बातों को ध्यान से सुना और एक सलाह दी. बीरबल ने रामलाल से कहाँ कि तुम दो दिन बाद जाकर अपना सामान मांगना. अगर नही दे तो उसे धमकाना की मैं दीवानजी के पास जा रहा हूँ. रामलाल बेचारा अपने घर चला गया.

बीरबल ने सोच विचार कर सेवक से कहकर श्याम लाल को बुलाया. बीरबल ने उसकी अच्छी आवभगत की. फिर उसे कहा... श्यामलालजी जहापनाह एक नयी अदालत खुलवाना चाहते हैं. जहाँ हिन्दुओ के मुकदमे सुने जायेंगे. बादशाह ने मुझे उस अदालत का न्यायधीश चुनने के लिए ज़िम्मेदारी सोंपी हैं. काफ़ी सोचने और विचारने के बाद मैंने सोचा हैं कि क्यों न तुम्हारा नाम बादशाह को सुझाऊ. श्यामलाल बहुत खुश हुआ और बोला बीरबलजी आपने बिलकुल ठीक किया हैं. मैं तो आपको ही अपना आदर्श मानता हूँ. इसलिए पूरी ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाऊंगा. ठीक हैं, श्यामलालजी अब हमने आपकी इच्छा जान ली हैं, अब इसके बारे में हम बादशाह से बात करेंगे. ऐसा, बीरबल ने कहा. अब तुम जाओ. श्यामलाल ख़ुशी ख़ुशी वापस गया. और सोचने लगा अगर मैं शहर का काजी बन गया तो मजा ही आ जायेगा.

श्यामलाल घर पहुंचा ही था कि फिर रामलाल आ धमका. उसने फिर सामान का तगादा किया. श्यामलाल ने फिर उसे मना कर दिया. रामलाल ने बीरबल के कहे अनुसार उसे धमकाया की अगर अभी मुझे सामान नही देते हो तो मैं दीवानजी के पास चला जाऊंगा. (दीवानजी मतलब – बीरबल)

आप पढ़ रहे हैं – 'अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां'

ये कहकर रामलाल लौटने ही वाला था कि श्याम लाल ने लपक कर उसके पैर पकड़ लिए. अरे! अरे! यार क्यों नाराज हो रहे हो, मैं तो तुम से मजाक कर रहा था. ले अपना सारा सामान ले जा. फिर श्यामलाल ने उसे अपना सारा सामान दे दिया. दरअसल श्यामलाल ने सोच लिया की अगर रामलाल बीरबल के पास गया, तो, मेरा काजी का पद तो गया. कुछ दिनों तक श्यामलाल बीरबल के बुलावे का इंतजार करता रहा. लेकिन बुलावा नही आने पर वह खुद ही जा पहुंचा. और पुछा मैं काजी(न्यायधीश) कब बनूँगा. बीरबल बोले किसी बेईमान को न्यायधीश बनाने से अच्छा न्यायालय खोला ही न जाए. दोस्त के साथ बेईमानी करने वाला क्या काजी बन सकता है. बेईमान को काजी नही बनाया जा सकता. श्यामलाल का सिर शर्म से झुक गया.

इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal kahaniya) से हमने क्या सिखा – कपट और लालच किसी भी तरह से हमको ऊपर नही उठने देता, बल्कि ओर गिराता हैं.

जल्दी बुलाकर लाओ – अकबर बीरबल की बुद्धिमानी की कहानी

अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां’ में आप पढने जा रहे हैं – जल्दी बुलाकर लाओ
एक सुबह बादशाह उठते ही अपनी दाढ़ी खुजाते हुए बोले! कोई है…? तभी एक सेवक जल्दी से दोड़कर आया और हाजिर हुआ. जी हुजुर…! बादशाह ने कहा, जाओ… जल्दी जाओ उसे बुलाकर लाओ… और हाजिर करो. सेवक के कुछ समझ मे कुछ नही आया किसे बुलाकर लाए किसे हाजिर करे. बादशाह से पलटकर सवाल करने की उसकी हिम्मत भी नही हुई. इस बात को उस सेवक ने दुसरे सेवक को बताई, दुसरे ने तीसरे को और तीसरे ने चौथे को बताई. इस प्रकार सभी सेवक यह बात जान गए और सभी उलझन मे पड़ गए. और सोचने लगे की किसे बुलाएं और किसे हाजिर करे!
आप पढ़ रहे हैं – ‘अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां’
बीरबल सुबह घुमने गये थे. बादशाह के निजी सेवकों को भागते देख बीरबल ने सोच लिया की जरूर बादशाह ने कोई अनोखा काम बता दिया होगा, जो इनकी समझ से बाहर है.
बीरबल ने एक सेवक को बुलाकर पुछा …अरे यह भाग दौड़ किस लिए हो रही हैं.
सेवक ने बीरबल को पूरी बात बताई… महाराज हमारी रक्षा करे. हम समझ नही पा रहे कि किसे बुलाना हैं? अगर जल्दी नही बुलाया तो हम पर आफत आ जाएगी. बीरबल कुछ समय के लिए चुप हो गए. सेवक ने पुछा महाराज… क्या करे?

बीरबल ने कहा! अच्छा ये बताओ हुक्म देते समय बादशाह क्या कर रहे थे. बादशाह के निजी सेवक जिसको बादशाह ने हुख्म दिया था, उसको हाजिर किया गया. तो सेवक ने बताया जिस समय नुझे तलब किया उस वख्त बादशाह बिस्तर पर बैठे अपनी दाढ़ी खुजा रहे थे. बीरबल तुरंत पूरी बात समझ गये और उनके होंठो पर मुस्कान भर आई. फिर उन्होंने उस सेवक को कहा… तुम हजाम को ले आओ.
सेवक हजाम को ले आया और बादशाह के सामने पेश कर दिया. बादशाह सोचने लगे… मैंने इसे तो ये बात बताई ही नही की किसे बुलाकर लाना है? फिर यह हजाम को लेकर कैसे हाजिर हो गया?
बादशाह ने सेवक से पुछा? सच बताओ! हजाम को तुम अपने मन से लेकर आये हो या फिर किसी ने ले आने का सुझाव दिया. सेवक गबरा गया, लेकिन बिना बताये छुटकारा भी कहा मिलने वाला था. सेवक ने बता दिया कि… जहापनाह ये सुझाव तो बीरबल महाराज ने हमको दिया.
बादशाह बीरबल की बुद्धि से प्रसन्न हुए और उनको इनाम से भी नवाजा.
इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal kahaniya) – “जल्दी बुलाकर लाओ” से हमने क्या सिखा – कभी कभी किसी मसले को सही ढंग से परखना ही उसका निदान होता हैं.

अकबर बीरबल की कहानियां – बीरबल नौ-रत्न कैसे बना

‘अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां‘ में आप पढने जा रहे हैं – बीरबल नौ-रत्न कैसे बना

एक बार अकबर बादशाह अपने मंत्रियो की टोली के साथ शिकार पर निकले थे. जंगल में काफी दिन इधर उधर घुमने के बाद बादशाह अकबर ने कहा कि हमे अभी तक एक भी शिकार नहीं मिला. बादशाह ने शेर खान को फटकार लगाई कि तुमने तो कहा ये जंगल तो शिकार से भरा पड़ा हैं, लेकिन ऐसा लगता तो नहीं हैं. इस पर शेर खान ने कहा माफ़ी हुजुर, पर पिछली बार... इतना कहकर चुप हो गया. बादशाह अकबर ने कहा मैं इसी वक्त महल जाना चाहता हूँ. शेर खान तुमसे तो मैं आगरा बात करूँगा.

नाराज बादशाह आगरा लौटने के लिए निकल पड़े. पर जल्दी ही वो रास्ता भटक गए, और इधर उधर घुमने लगे. फिर अंत में उनको तीन रास्ते दिखाई दिए. बादशाह ने सभी से पुछा. कोई बोलता है पहला वाला. कोई बोलता हैं दूसरा वाला ज्यादा पहचाना लगता हैं. इसी दौरान वहां से कोई एक आदमी गुजर रहा था.

बादशाह ने उस आदमी को रोका और बोले, क्या तुम बता सकते हो इन तीनो रास्ते में से कोनसा रास्ता आगरा जायेगा. उस युवक ने कहा. बादशाह इन तीनो में से कोई भी रास्ता आगरा नही जाएगा. बादशाह ने कहा तुम कहना क्या चाहते हो? बादशाह...! रास्ता कभी नही जाता...लोग जाते है. इस बात पर सभी हंस पड़े.

आप पढ़ रहे हैं – अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां- बीरबल नौ-रत्न कैसे बना

बादशाह ने उस इन्सान से उसका नाम पुछा. उसने अपना नाम महेश दास बताया. फिर महेश दास ने पुछा. अब आप बताए कि आप कोन हैं? और आपका नाम क्या हैं? तुम पूरे हिन्दुस्थान के बादशाह, बादशाह अकबर से बात कर रहे हो. मुझे तुम पसंद आये. मेरे दरबार में तुम जैसे निडर और बुद्धिमान लोगो की जरुरत हैं. अगर तुम मेरे शाही दरबार मे शामिल होना चाहते हो तो इस अंगुटी को लो और जब कभी तुम्हारा मन करे तो मेरे पास आना. मैं तुरंत तुम्हें पहचान लूँगा. खैर ...अब हमें आगरा जाने का रास्ता बताओ. हम सभी बहुत थके हुए हैं. और सूरज छुपने से पहले हमे आगरा पहुचना हैं. इस बार महेश दास ने बिना किसी व्यंग्य से उनको सही रास्ता बता दिया. बादशाह और सभी मंत्री आगरा के लिए निकल पड़े. कुछ सालो बाद महेश दास उसी रास्ते से गुजर रहे थे तो उनको बादशाह अकबर की बातें याद आयी. महेस दास बादशाह अकबर के किले पर पहुंचे.

किले के द्वार पर आकर द्वारपाल से कहा, मैं बादशाह अकबर से मिलना चाहता हूँ. सिपाही अन्दर गया और सुचना देकर आया की महेश दास नाम को कोई सख्श बादशाह से मिलना चाहता हैं. उसको अनुमति मिल गयी. महेश दास पहली बार बादशाह के दरबार में आये थे. बादशाह ने उसके आते ही नाम पुछा, और कहा क्या हम एक दुसरे को जानते हैं.ऐसा कहने पर महेशदास ने वो अंगूठी दिखाई, जो उस वक्त बादशाह ने दी.

बादशाह को सब कुछ याद आ गया लेकिन फिर भी बादशाह ने कहा मैं तुम्हारा इम्तिहान लेना चाहूँगा. क्या तुम सच में वो ही हो या कोई और? मेरे दरबार के पांच दरबारी एक एक करके तुमसे सवाल पूछेंगे. देखते हैं तुम उनको क्या जवाब देते हो? बादशाह के इस आदेश पर सभी मंत्री एक एक सवाल पूछने लगे.

पहला सवाल.- ऐसे दो पड़ोसियो के नाम बातों जो एक दुसरे को देख नही सकते?

महेश दास ने इसका उत्तर दिया – आँखे मेरे दोस्त आंखे.

दूसरा सवाल – एक एसे दुश्मन का नाम जिसे हराया नही जा सकता?

मौत… मृत्यु से कोई नही जित सकता.

तीसरा सवाल – ऐसा क्या है जो मौत के बाद भी जीवित रहता हैं?

गर्व, महिमा जो सदियों तक जिन्दा रहती हैं.

चौथा सवाल एक रेखा थी…जिसको बिना मिटाये छोटा करना था?

महेश दास ने इस रेखा के पास एक दूसरी रेखा खिंच दी. तो पहले वाली छोटी हो गयी.

कुछ ऐसा बताओ जिसको न तो सूरज देख सकता और न ही चाँद?

अंधकार, अंधकार को न तो सूरज न ही चाँद देख सकता.

अब बादशाह बोले अब मेरी बारी.

अच्छा ये बताओ आगरा की गलियों मे कितने मोड़ हैं?

केवल दो बादशाह पूरे आगरा में केवल दो मोड़ हैं. दाये और बाये.

आज से तुम मेरे नौ रत्नों में से एक तुम भी नवरत्न हो. और तुम्हें महाराज बीरबल के नाम से जाना जाएगा.

फिर क्या था, पूरा दरबार अकबर और बीरबल की जय जय से गूंज उठा.

इस अकबर बीरबल के किस्से(akbar birbal kahaniya) से हमने क्या सिखा – केवल बुद्धि के बल पर पूरे विश्व को जीता जा सकता हैं.

तो यह थी अकबर बीरबल की हिंदी कहानियां’ की एक रोचक और मजेदार कहानी. एसे ही हिंदी कहानियां अपनी मेल में प्राप्त करने के लिए हमारे हिंदी कहानियां के पेज को subscribe करे. आप नीचे दिए गये बॉक्स में भी अपना विवरण भर सकते हैं.



हिंदी कहानियां

PASANDHAI.IN

PASAND-HAI.IN



HINDI KAHANIYA, QUERIES, QUOTES, HINDI BIOGRAPHIES SADH-GYAN.



हिंदी कहानियां

– एक कहानी एसी भी